'उसने कहा था' की कहानी-कला: आनंद, उत्सुकता एवं अनुसंधान की यवन्नवतामुपैति

साहित्य में कभी-कभी ऐसी कालजयी कृतियों का सृजन होता है जो न केवल युगीन चेतना का प्रतिनिधित्व करता है अपितु पारंपरिक धारा-प्रवाह को बदलकर अपने प्रभाव से 'नए युग का द्वार' भी खोलता है। 'उसने कहा था' ऐसी ही एक कहानी है जो हिंदी कहानी की शिल्प-विधि तथा विषय-वस्तु के विकास दोनों ही दृष्टि से 'मील का पत्थर' मानी जाती है। बकौल वरिष्ठ आलोचक मधुरेश- "उसने कहा था वस्तुत: हिंदी की पहली कहानी है जो शिल्प विधान की दृष्टि से हिंदी कहानी को एक झटके में प्रौढ़ बना देती है। प्रेम, बलिदान और कर्तव्य की भावना से अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं, किंतु यह कहानी अपनी मार्मिकता और सघन गठन के कारण आज भी अद्वितीय बनी हुई है। हिंदी कहानी के आरंभ-काल में ऐसी श्रेष्ठ रचना का प्रकाशित होना एक महत्त्वपूर्ण घटना है।"[1] वैसे देखा जाए तो कहानी कहने और सुनने की परंपरा किसी-न-किसी रूप में मानव सभ्यता के आरंभिक काल से ही चली आ रही है। दादी-नानी की कहानी के रूप में प्रचालित मौखिक परंपराओं के स्रोत की खोज को फिलहाल छोड़ भी दें तो अनुमान है कि "जादूगरों की कथाएँ किसी-न-किसी रूप में 4000 ई.पू.-3000 ई.पू. तक प्रचलित थी। ऋग्वेद में जिसकी गणना संसार के प्राचीनतम साहित्य में होती है, काल्पनिक कहानी अपनी अनेक साहित्यिक विशेषताओं के साथ विद्यमान है। इतिहास, पुराण, रामायण, महाभारत तथा बौद्ध धर्म संबंधी अवदान और जातक कथाओं के अक्षय भंडार हैं।"[2] इतना ही नहीं 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' की लोकप्रियता भी किसी से छिपी हुई नहीं है। बतौर गणपति चंद्र गुप्त- "पंचतंत्र का अनुवाद छठी शती में ईरान के शाह खुशरो नौशेरवाँ ने पहलवी भाषा में करवाया था।"[3] स्पष्ट है कि कहानी की परंपरा न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में प्राचीन काल से ही विद्यमान थी तथा कल्पना, चमत्कार, जिज्ञासा, रहस्य, संघर्ष, आकस्मिकता, दैवीय कृपा एवं घटना बहुलता इसके अनिवार्य तत्व थे। लेकिन एक साहित्यिक विधा के रूप में आज हम जिस कहानी से रूबरू होते रहते है उसका विकास बीसवीं शताब्दी की देन है।

'उसने कहा था' न केवल हिंदी की सर्वाधिक चर्चित एवं लोकप्रिय कहानियों में से एक है अपितु अक्षुण्ण पठनीयता, विषयगत प्रासंगिकता एवं उत्कृष्ट कलात्मकता के कारण सार्वकालिक श्रेष्ठ कहानियों में अग्रगण्य है। पहली बार यह कहानी महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित पत्रिका 'सरस्वती' (भाग-16, खंड 1) में 1915 ई. में प्रकाशित हुई थी। इसके लेखक पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी आधुनिककालीन हिंदी साहित्य को वैविध्यपूर्ण एवं गौरवमय बनाने वाले साहित्य-निर्माताओं में उल्लेखनीय हैं। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के समर्थक गुलेरीजी ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से कविता, कहानी, आलोचना, निबंध, संस्मरण, जीवन चरित एवं पत्रकारिता जैसी अनेक विधाओं को समृद्ध किया है। देश-विदेश की कई भाषाओं पर उनका गंभीर अधिकार था। वे संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवधी, पंजाबी, अंग्रेजी, फ्रेंच इत्यादि कई भाषाओं के अच्छे जानकार और धर्म, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, चित्रकला, संगीत, राजनीति एवं इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान थे। जहाँ तक कहानी विधा का सवाल है तो यहाँ उन्होंने मात्र तीन कहानियाँ 'सुखमय जीवन', 'बुद्धु का काँटा' एवं 'उसने कहा था' की रचना की है, परंतु इन तीन कहानियों के बल पर ही उन्होंने साहित्याकाश में जो उपलब्धि हासिल की है वह दुर्लभ है, अदभुत है, उदाहरणीय है। 'उसने कहा था' कहानी एक यथार्थवादी रचना है या आदर्शवादी इस बात को लेकर आलोचकों की अपनी अलग-अलग राय है लेकिन इतना तय है कि इसमें कहानीपन का वह तत्व विद्यमान है जो विषय-वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टि से हिंदी कहानी के लिये मार्गदर्शक का काम करता है। आदर्श के एक निश्चित बिंदु से परिचालित होकर भी यथार्थ के व्यापक विस्तार में फैले होने के कारण यह कहानी हिंदी कथा-साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

---

1. मधुरेश- हिंदी कहानी का विकास, पृ. 18
2. धीरेन्द्र वर्मा (प्र.सं.)- हिंदी साहित्य कोश, पृ. 182
3. गणपतिचंद्र गुप्त- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, खंड-2, पृ. 451

हिंदी के पहले वैज्ञानिक इतिहास-लेखक आचार्य रामचंद शुक्ल इस कहानी के बारे में लिखते हैं- "पक्के यथार्थवाद के बीच सुरुचि की चरम मर्यादा के भीतर भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यंत निपुणता के साथ संपुटित है। घटना इसकी ऐसी है जैसी बराबर हुआ करती है पर उसमें भीतर से प्रेम का एक स्वर्गीय स्वरूप झाँक रहा है- केवल झाँक रहा है निर्लज्जता के साथ पुकार या कराह नहीं रहा है। कहानी भर में कहीं प्रेमी की निर्लज्जता, प्रगल्भता, वेदना की वीभत्स विवृत्ति नहीं है। सुरुचि के सुकुमार से सुकुमार स्वरूप पर कहीं आघात नहीं पहुँचता। इसकी घटनाएँ ही बोल रही हैं, पात्रों के बोलने की अपेक्षा नहीं।"[4] स्पष्ट है कि शुक्लजी के अनुसार यह कहानी प्रेम के यथार्थ पक्ष को सुरुचि के साथ प्रस्तुत करती है। आचार्य शुक्ल कहानी के सुरुचिपूर्ण होने को जहाँ कहानीपन से जोड़ते हैं वहीं वे प्रेम में निर्लज्जता को नहीं मर्यादा को, त्याग को महत्त्व देते हैं। ऐसा करके ही उन्होंने इस कहानी के यथार्थ-पक्ष को प्रमाणपुष्ट तो किया ही, साथ ही यह भी बताया कि रीति मूल्यों से साहित्य की आलोचना आधुनिक साहित्य के लिये सर्वथा अपर्याप्त है। शुक्लजी के बाद आलोचकों का ऐसा भी वर्ग है जो इस कहानी को प्रेम की एक आदर्शवादी कहानी मानकर इसमें भारतीयता को खोजने की कोशिश करते जान पड़ते हैं। जैनेन्द्र कुमार कहानी की परंपरा को पंचतंत्र एवं हितोपदेश से जोड़ते हुए इसे भारतीय लोक-मन में बसी हुई परंपरा से जोड़ते हैं। आधुनिक हिंदी कहानी पर पश्चिम के प्रभाव को स्वीकार करते हुए वे लिखते हैं- "...यद्यपि हिंदी की प्रारंभिक कहानियाँ तुतलाती और अटक-अटक कर चलती हैं, पर दो-चार वर्षों में ही उसने विश्वास से डग भरने शुरू किए। यह विश्वास आरंभ की जिस कहानी में बड़ी प्रतिभा से प्रकट हुआ है वह है गुलेरी जी की कहानी 'उसने कहा था।' पहले महायुद्ध की पृष्ठभूमि में लिखी गई यह कहानी अपनी सर्वांगता में ऐसी सुंदर है कि आज भी आनंद-विस्मय का कारण बनी हुई है। त्यागमय प्रेम का वह चित्र हमारे आदर्श की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए है।"[5] 'उसने कहा था' को दुखांत परंतु उदात्तता से जोड़ते हुए रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं- "सिखों की इस शौर्यभरी कहानी में आरंभ से अंत तक करुणा की धारा अंतर्व्याप्त है। और करुणा तथा दुखांत के साथ है उदात्तता का भाव जो लहनासिंह के आत्मत्याग में से बड़े कोमल रूप में प्रस्फुटित होता है। यहाँ स्मरणीय है कि उदात्तता की परिकल्पना व्यवहार में अनिवार्य रूप से ट्रेजेडी और महाकाव्य के साथ जुड़ी रही है। एक छोटी कहानी में वह उदात्तता जनम ले यह कुछ असाधारण है।"[6] चंद्रधर शर्मा गुलेरी पर 'मोनोग्राफ' लिखने वाले विद्वान मस्तराम कपूर 'उसने कहा था' को आध्यात्मिक धरातल पर स्वीकार करते हैं। वे लिखते हैं- "यह कहानी प्रेम की आध्यात्मिक अनुभूति की है। आध्यात्मिक इस अर्थ में कि इसमें प्रेमी-प्रेमिका के बीच शारीरिक संबंध की उष्मा नहीं है बल्कि एक ज्योति की तरह दोनों के हृदय में विद्यमान रहता है और वह अनुभूति इतनी सुखद, इतनी निर्मल है कि युद्ध की विभीषिका भी उसे मंद नहीं कर पाती।"[7]

साहित्य की सभी विधाओं में कहानी में जीवन की वास्तविकता को अभिव्यक्त करने की गुंजाईश सर्वाधिक होती है। शास्त्रों में कहानी के छह तत्व कथावस्तु, चरित्र, संवाद, भाषा, देशकाल एवं उद्देश्य बताए गए हैं, परंतु यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक कहानी में ये सभी तत्व एक साथ समानुपातिक रूप में उपस्थित हो। लेखक अपनी सुविधानुसार या उद्देश्य की प्राथमिकता को ध्यान में रखकर इन तत्वों की समुचित योजना करता है। 'उसने कहा था' जैसा कि हम सभी जानते हैं कि न केवल कथ्य अपितु कला की दृष्टि से भी एक उत्कृष्ट रचना मानी जाती है। अपने आरंभिक रूप में ही इतने प्रौढ़-शिल्प का प्रयोग गुलेरी जी की गरिमावृद्धि तो करता ही है, साथ ही हिंदी कहानी के विकास को भी सशक्त धरातल प्रदान करता है। गुलेरी साहित्य के शोधकर्ता पीयूष गुलेरी लिखते हैं- "गुलेरीजी के कहानी की सर्वोपरि विशेषता कथानक, चरित्र, वातावरण और लक्ष्य में नाटकीयता लाना है जो उस युग के अन्य कहानीकारों में नहीं मिलती है।"[8] बात बिल्कुल स्पष्ट है कि 'उसने कहा था' कहानी-कला की दृष्टि से भी एक सशक्त और युग-प्रवर्तक रचना है। इसलिये आगे इस पर विचार करते हैं कि कहानी-कला की कौन-सी विशेषता इसे इतना विशिष्ट बनाती है और क्या लेखक उद्देश्य के अनुरूप शिल्प को अभिव्यक्त कर पाने में सफल हो पाया है या शिल्प के कारण कथ्य महत्त्वपूर्ण बन गया है?

---

4. रामचंद्र शुक्ल- हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 275-276
5. जैनेन्द्र कुमार- 23 हिंदी कहानियाँ; पृ. 11
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी- हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ. 145
7. मस्तराम कपूर- चंद्रधर शर्मा गुलेरी, पृ. 42
8. पीयूष गुलेरी- चंदधर शर्मा गुलेरी: व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. 7

1. कथावस्तु/कथानकः कहानी का उद्देश्य केवल दृश्य जगत का वर्णन करना नहीं अपितु जीवन के रहस्य, शाश्वत, वास्तविक एवं प्रासंगिक मूल्यों को जागृत कर पाठकों के सामने रखना होता है। पाठकों के सामने मूल्यों को रखने के लिये लेखक को कथावस्तु का सहारा लेना पड़ता है, इसलिये कथावस्तु को कहानी का अनिवार्य तत्व माना जाता है। हिंदी कहानी के विकास के आरंभिक दौर पर नजर डालें तो उसमें हमें एक ओर परंपरा में निहित आदर्श और नैतिकतावाद की झलक स्पष्टतः दिखाई पड़ती है तो दूसरी ओर तिलस्म, ऐय्यारी एवं असंभाव्य कल्पना का धरातल भी विद्यमान है। गुलेरीजी का मानना था कि तिलस्म, ऐय्यारी एवं फार्मूलाबद्ध सामाजिक साहित्य यानी उपदेशमूलक साहित्य विलक्षण और असंभाव्य पात्रों के बहाने मात्र कुतुहल पैदा करने की कोशिश करते हैं। ऐसी कहानियाँ मनोरंजन की शर्तों को तो पूरा करती हैं लेकिन वह लोगों में रुचि उत्पन्न करने में बिल्कुल नाकाम रहती है। चूँकि यथार्थ से युक्त साहित्य ही पाठकों में साहित्य के प्रति रूचि उत्पन्न करता है, इसलिये लेखक को अपने आस-पास की सामान्य वस्तु या घटनाओं से ही सौंदर्य का सृजन करना चाहिए। यही कारण है कि 'उसने कहा था' में उन्होंने यथार्थपूर्ण वातावरण में प्रेम के उदात्त एवं गंभीर स्वरूप की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। नामवर सिंह लिखते हैं- "कहानी केवल पढ़ने की चीज नहीं होती। कहानी में दृश्य और श्रव्य दोनों गुण होने चाहिए। इस कहानी ने दिखाया कि आपकी आँखों के सामने जो दृश्य खड़ा किया गया है और आपके कानों ने जो सुना है वह कितना विश्वसनीय है।"[9]

'उसने कहा था, प्रेम की संवेदनात्मक मनोभूमि पर आधारित एक चरित्र-प्रधान कहानी है जिसमें प्रेम, कर्तव्य और त्याग नामक मानवीय संवेदना को भारतीय परंपरानुसार वर्णित किया गया है। इसमें लेखक ने पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर ही कथानक की सर्जना की है। पूरी कहानी को मुख्यरूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है- 1. अमृतसर में सात्विक प्रेम का उदय होना 2. फ्रांस के मोर्चे पर युद्ध भूमि का वर्णन तथा 3. मरणासन्न स्थिति में पुरानी स्मृतियों का उभरना। कथावस्तु के इन तीनों सूत्रों को अभिव्यक्त करने के लिये लेखक ने पूरी कहानी को पाँच भागों में बाँटा है। जिसमें सिर्फ पहले भाग में देश के एक कस्बे का चित्र दिया गया है जबकि बाकी चारों भाग युद्ध से संबंधित हैं। इसलिये कुछ आलोचकों (जैसे रमेश उपाध्याय एवं अन्य) को लगता है कि इस कहानी का महत्त्वपूर्ण विषय प्रेम नहीं युद्ध है। लेकिन पांच में से चार खंडों में युद्ध की कथा होते हुए भी युद्ध पृष्ठभूमि का काम करता है। युद्ध के मोर्चे का वर्णन है, युद्ध की स्थितियों एवं परिस्थितियों का नहीं। यह कहानी युद्ध की नहीं है यह इस बात से भी साबित होती है कि यहाँ युद्ध के विरोध की कोई बात ही नहीं है और कहानी की विभिन्न स्थितियाँ स्वयं बोलने लगती है कि लगातार युद्ध की स्थिति में होना किस प्रकार से भयावह होता है। इसी भयावहता को दूर करने के लिये लेखक ने स्मृति का बड़ा ही रचनात्मक उपयोग किया है। एक बात और बकौल स्वयं प्रकाश- "गुलेरी जी कभी यूरोप नहीं गए थे। उन्होंने युद्ध का मोर्चा, मोर्चे पर बनी खंदकें, वहाँ की धुंध और बारिश इत्यादि कभी नहीं देखे थे। उन्हें तो यह भी पता नहीं होगा कि खंदक का आकार क्या होता है या बर्फीली खंदकों में रात गुजारने वाले फौजियों के लिए रम या व्हिस्की की नोट घुटकी मारते रहना जरूरी होता था। यूरोप के मोर्चे पर लड़ी जा रही लड़ाई का उनका जो भी ज्ञान होगा वह भारतीय सिपाहियों द्वारा लौट कर सुनाए गए किस्सों पर ही आधारित होगा लेकिन पिछले सौ सालों में किसी एक भी आलोचक ने गुलेरी जी की प्रामाणिकता पर सवाल नहीं उठाया। युद्ध के चित्र को कल्पना प्रसूत नहीं बनाया।"[10] इसलिये युद्ध यहाँ पृष्ठभूमि मात्र है, लेखक का उद्देश्य भारतीय संस्कृति की विशेषता, प्रेम में त्याग एवं समर्पण को बताना है। पीयूष गुलेरी भी कहते हैं- "संवेदनात्मक प्रेम एवं कर्तव्य की दृष्टि से 'उसने कहा था' कहानी अद्वितीय है। कथानक का आरंभ बड़े सहज और स्वाभाविक ढंग से हुआ है। आकर्षण भी सुकुमार रूप में होता है, जो धीरे-धीरे पवित्र प्रेम में परिणत हो जाता है। कालांतर में संयोगवश उस बालपन के प्रेम का पच्चीस वर्ष के अनंतर पुनः उदय होता है, परंतु तब वह विशुद्ध कर्तव्य में बदल जाता है और उसकी परिणति त्याग एवं उत्सर्ग के चरम बिंदुओं पर होती है।"[11]

कुछ आलोचकों खासकर जो इस कहानी का उद्देश्य युद्ध की विभीषिका को प्रकट करना मानते हैं, को अमृतसर के भीड़ वाले बाजार और तांगे वालों का वर्णन कथानक की संगति के साथ असंबद्ध लगता है। परंतु कहानी का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर द्वन्द्वात्मक प्रभाव की दृष्टि से यह सार्थक सिद्ध होता है। कहानी में एक ओर स्नेह सूत्र के विकास की पृष्ठभूमि है तो दूसरी ओर उसके चरम

---

9. नामवर सिंह- उसने कहा था (पक्षधर पठीका, अंक जुलाई-दिसंबर 2014 पृ. 23)
10. स्वयंप्रकाश- उसने कहा थाः सौ साल पुरानी कहानी (अनहद पत्रिका, अंक फरवरी 2015, पृ. 150)
11. पीयूष गुलेरी- चंद्रधर शर्मा गुलेरीः व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. 193

उत्कर्ष के लिये युद्ध की पृष्ठभूमि। लेखक कथानक के दोनों प्लॉट को स्वप्न चित्र (Flash back) के माध्यम से जोड़ता है। सूबेदार हजारा सिंह और बोधा सिंह कौन हैं- इससे पाठक तभी परिचित हो पाते हैं जब वह लहनासिंह के पूर्व स्मृति को जानता है। लेखक ने ऐसा इसलिये किया है ताकि पाठक की जिज्ञासा आदि से अंत तक बनी रहे। कहानी का यह विधान बिल्कुल नाटकीय है। कहानी में यद्यपि घटना स्थल एवं पात्रों की संख्या अनेक हैं किंतु उनमें प्रभाव की एकता का पूरा निर्वाह किया गया है। उसने कहा था ही वह रहस्यसूत्र है जिससे पूरी कथा का ताना-बाना बुना गया है और यही पाठक की उत्सुकता को आद्यंत बनाए रखने में सफल होता है। कहानी के अंत में गोली लगने के बावजूद जब लहनासिंह बोधा सिंह को गाड़ी से जाने के लिए कहता है और कहता है कि 'जब घर जाओ तो यह कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था, वह कर दिया' तब जाकर प्रेम की सात्विकता एवं त्याग की भारतीयता झाँकती हुइ दिखाई देती है। गणपति चंद्र गुप्त ठीक ही लिखते हैं- "विभिन्न दृश्यों के चित्रण में सजीवता, घटनाओं के आयोजन में स्वाभाविकता एवं शैली की रोचकता सभी विशेषताएँ एक-से-एक बढ़कर हैं।... क्या भाव क्या विचार तथा शिल्प और क्या शैली सभी की दृष्टि से यह कहानी एक अमर कहानी है।"[12]

2. पात्र या चरित्र-चित्रण: कहानी के भीतर परिस्थितियों को धारण करने वाला पात्र कहलाता है। मानव-जीवन के विविध पक्षों को शब्दों के माध्यम से उपस्थित करने की योग्यता ही पात्र या चरित्र-चित्रण की कसौटी होता है। फिर कहानी तो छोटे आकार की गद्यात्मक रचना होती है, इसलिए इसके पात्र जितने सजीव एवं यथार्थ होंगे कहानी उतनी ही सफल मानी जाएगी। हम जानते हैं कि गुलेरीजी का अभीष्ट साधारण पात्रों द्वारा असाधारण सौंदर्य की सृष्टि करना रहा है। इसलिए अपनी कहानियों में उन्होंने चरित्रों की सृष्टि कल्पना जगत से नहीं बल्कि जीवन के यथार्थ धरातल से की है। 'उसने कहा था' में हलाँकि पात्रों की संख्या तो अधिक है परंतु लेखकीय दृष्टिकोण और कहानी की संवेदना दोनों पूर्ण रूप से एक ही पात्र लहनासिंह पर ही केन्द्रित है। इसलिए संपूर्ण कहानी में लहनासिंह का चरित्र जितना मुखर और जीवंत है उतना किसी दूसरे पात्र का नहीं। लहनासिंह के द्वारा लेखक ने एक ऐसे व्यक्ति का चित्र उपस्थित किया है जो हर कदम पर अपनी दुर्बलताओं पर विजय पाकर एक आदर्श स्थापित करता है। यहाँ तक कि सुबेदारनी यानी वही कुड़िमाई वाली लड़की जिसे लहनासिंह के बाद दूसरा प्रमुख पात्र माना जाता है- का चरित्र भी इस रूप में प्रस्तुत किया गया है जिससे लहना सिंह का व्यक्तित्व और अधिक उज्जवल रूप में उभर कर सामने आता है। तांगेवाले का घोड़ा जो दही दुकान के आगे बिगड़ गया था वहाँ खुद लहनासिंह द्वारा घोड़े की लात खाकर उसके प्राण बचाने से लेकर युद्ध के मैदान में उसके पुत्र की जान बचाने तक की घटनाओं में इसे आसानी से देखा जा सकता है।

पात्रों के चरित्रांकन में गुलेरी जी ने अपनी इस कहानी में वर्णनात्मक एवं नाटकीय पद्धति के अलावा मनोविज्ञान का भरपूर प्रयोग किया है। यथा किशोर लहनासिंह के सुकुमार मन का मर्माहत होना अत्यंत कुशलता से दिखाया गया है। लेखक वहाँ लहना सिंह के चरित्र को सामान्य से उदात्तता की ओर ले जाता है। उसके मन की उथल-पुथल तथा आत्मसंघर्ष को अंकित करने में लेखक को भरपूर सफलता प्राप्त हुई है। उसने अत्यंत सहृदयता से कई छोटी-बड़ी घटनाओं के माध्यम से उसके निश्छल लगाव, प्रणपालन, साहसी तथा प्रत्युतपन्नमतित्व जैसे गुणों को उभारा है। कड़ी ठंड पड़ने पर अपनी गर्म जरसी बोधा सिंह को दे देना तथा स्वयं खाकी कोट और जीन की वर्दी में रहना उसके त्याग एवं प्रेम जैसे भावनाओं का परिचय देता है तो लपटन साहब (जर्मन सेना) से बात करते समय उसकी तीक्ष्ण-बुद्धि, तर्क-शक्ति एवं निर्णय-क्षमता का प्रमाण मिलता है। लहना सिंह के अतिरिक्त शेष पात्र जैसे सूबेदारनी, हजारा सिंह, वजीरा सिंह, लपटन साहब, बोधा सिंह इत्यादि सभी सहायक पात्र हैं जो अपने कार्य तथा संवादों के द्वारा लहनासिंह के चरित्र और उसके उदात्त प्रेम कहानी को विकसित करने में अपना योगदान देते जान पड़ते हैं।

3. कथोपकथन या संवाद: पात्रों के चरित्रगत विशेषताओं के उद्‌घाटन एवं कथासूत्रों को सुसम्बद्ध एवं गतिशील करने में संवादों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इसके माध्यम से जीवन की गहरी-से-गहरी गुत्थियों को भी आसान से सुलझाया जा सकता है। कथा साहित्य के दोनों रूपों (उपन्यास और कहानी) में संवाद के लिये निम्नलिखित गुणों की उपस्थिति को जरूरी बताया गया है-

(i) कथावस्तु को सार्थकता देकर कथानक को गति प्रदान करना।

(ii) चरित्रों की जटिलता को उद्‌घाटित करना तथा

(iii) प्रसंगानुकूल सार्थक, संक्षिप्त एवं अर्थगर्भित होना।

12. गणपति चंद्र गुप्त- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृ. 454

भाषा और शैली की भाँति ही गुलेरीजी की कहानियों में सफल कथोपकथन की भी सृष्टि हुई है। विवेच्य कहानी 'उसने कहा था' में संवादों के माध्यम से ही कथातत्व का विकास किया गया है। यहाँ संवादों में नाटकीय उतार-चढ़ाव तथा पात्र की स्थिति एवं अनुकूलता का पूरा ध्यान रखा गया है। अमृतसर के बाजार वाले भाग में संवादों का लोकल टोन एवं उसकी रागात्मकता, युद्ध के मोर्चे पर शब्दों की गंभीरता फ्लेश बैंक वाले प्रसंग में शब्दों तथा संवादों के भावुक संदर्भ से हर कोई सहमत होगा। इसलिए इसके संवाद में एक ओर संक्षिप्तता, सजीवता एवं स्वाभाविकता का गुण सहजता से मिल जाता है वहीं दूसरी ओर वह पाठकों के हृदय पर अमिट छाप छोड़ने में भी सक्षम है। एक उदाहरण देखिए-

तेरे घर कहाँ हैं?

मगरे में और तेरे?/ माझे में, यहाँ कहाँ रहती है?

अतरसिंह की बैठक में, वह मेरे मामा होते हैं।

मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरु बाजार में है।..."

पात्रों के चारित्रिक विकास की दृष्टि से भी 'इस कहानी' के संवाद अत्यंत विश्वसनीय हैं। 'तेरी कुड़िमाई हो गई', 'धत्' 'रेशम के फूलों वाल सालू' तथा 'तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ' जैसे प्रयोगों ने कितने थोड़े शब्दों में कितना अधिक कह दिया है। इतना ही नहीं लहनासिंह के बेहोशी में कहे गए संवाद न केवल उसके चरित्र को उभारते हैं बल्कि कथानक की गुत्थियों को भी आसानी से सुलझा देते हैं। लहनासिंह और लपटन साहब के बीच का संवाद जहाँ नाटकीय प्रभाव की सृष्टि करने में सफल हुआ है वहीं युद्ध के मैदान में सैनिकों के बीच का परस्पर हँसी-मजाक (जैसे- "मैं पाधा बन गया हूँ/ करो जर्मनी के बादशाह तथा तर्पण" तथा युद्ध के बाद फिरंगी मेम से शादी पर लहना सिंह का कहना कि 'चुप कर यहाँ वालों को शरम नहीं।") कहानी में रोचकता एवं कुतुहलता को बनाए हुए है। इस प्रकार हम देखते हैं कि 'उसने कहा था' का संवाद एक ओर जहाँ अनुभूति की तीव्रता, हास्य एवं व्यंग्य-विनोद से परिपूर्ण है वहीं दूसरी ओर कथानक को नाटकीय ढंग से विकसित करने में भी सहायक सिद्ध हुआ है।

4. देशकाल वातावरण: वास्तव में देशकाल और वातावरण के कौशलपूर्ण चित्रण से ही कहानी की पूर्ण सार्थकता सिद्ध होती है तथा कहानीकार की संवेदना उचित तीव्रता के साथ संप्रेषित होती है। छोटे आकार की रचना होने के कारण कहानी में वैसे ही वातावरण निर्माण की गुंजाईश बहुत कम होती है, फिर अगर कहानी का आयाम कुछ विस्तार में हो तो उसे सजीव रूप में उभारना और भी कठिन होता है। देशकाल और वातावरण-निर्माण में गुलेरीजी अपना सानी नहीं रखते। 'उसने कहा था में भी चाहे अमृतसर के बाजार का वर्णन हो या बाद में युद्ध के मोर्चे का, इस कहानी का सबसे बड़ा गुण परिवेशगत यथार्थ का अंकन है। एक उदाहरण देखिए- "राम-राम यह भी कोई लड़ाई है। दिन रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गई। लुधियाने से दस गुणा जाड़ा और मेह और बर्फ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं।"

इस कहानी के कथानक का संबंध मुख्यत: पंजाबी सिख परिवार तथा युद्धभूमि से है। लेखक ने इन दोनों के अनुकूल ही वातावरण का निर्माण किया है। सिखों का सिगरेट न पीना, मंगनी के बाद सिख लड़की का कढ़ा हुआ रेशमी सालू ओढ़ना, वाहे गुरुजी द खालसा जैसे शब्द प्रयोग, एक अकाली सिंह का अपने को सवा लाख के बराबर मानना एवं युद्धभूमि में उसके अभूतपूर्व साहस का प्रदर्शन, सिखों का दही से सिर धोना कहानी के वातावरण निर्माण की यथार्थता का सजीव चित्र उपस्थित करते हैं। इतना ही नहीं युद्धभूमि में सैनिक किस प्रकार बातें करते हैं, कैसे गीत गाते हैं, शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिये किन तरकीबों का सहारा लेते हैं इन सबका चित्रण बड़ी कुशलता से किया गया है। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस समय यह कहानी लिखी जा रही थी उस समय प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था। ब्रिटिश फौजें फ्रांस की तरफ से जर्मनी के खिलाफ लड़ रही थी। भारत के सैनिक फ्रांस के लिये जान दे रहे थे। बकौल नामवर सिंह हमें यह भी याद रखना चाहिए कि "1857 में बंगाल आर्मी ने जहाँ विद्रोह किया था वहाँ अकेले सिख रेजीमेंट थी जो बाकायदे अंग्रेजों के साथ थी।...इसलिए पहले महायुद्ध के मोर्चे पर जो आर्मी भेजी गई थी वह सिख बटालियन थी।"[13] राजभक्ति और देशभक्ति का सहअस्तित्व कैसे 'उसने कहा था' में भी आकार हमें भारतीयता का पाठ पढ़ाएगा

13. नामवर सिंह- उसने कहा था (पक्षधर पत्रिका, अंक-जुलाई-दिसंबर 2014, पृ. 21

इसका पूरा देश एवं काल इस कहानी में मौजूद है। इसलिए 'उसने कहा था' का देशकाल एवं वातावरण प्रेम और युद्ध दोनों ही स्थितियों के निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ है।

5. भाषा-शैली: रचनावस्तु के अनुरूप भाषा-शैली का चयन एवं उसकी अभिव्यक्ति कहानीकारों के लिए भी चुनौतीभरा रहा है। गुलेरीजी की भाषा में जीवनगत परिस्थितियों को विभिन्न मनोदशाओं में अभिव्यक्त करने की अद्‌भुत रचनात्मक क्षमता विद्यमान है। नामवर सिंह सही ही लिखते हैं कि "मैं समझता हूँ कि गुलेरी जी हिंदी के उन थोड़े से गद्यकारों में से हैं जो संस्कृत के पंडित होते हुए भी बोलता हुआ गद्य लिखते है।"[14] जाहिर है मनोदशाओं के अनुरूप भाषा की सर्जना, वह भी इतना जीवंत जैसे 'बोलता हुआ गद्य' अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। भाषा की दृष्टि से 'उसने कहा था' की सर्वोपरि विशेषता पात्र, परिस्थिति तथा घटना के अनुरूप शब्द एवं शैली का चयन है। संस्कृत के प्रकांड पंडित होते हुए भी गुलेरी जी केवल तत्सम शब्दों के प्रयोग का आग्रह कतई नहीं रखते हैं। उनकी इस कहानी के पात्र भी अवसर के अनुकूल उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से कहानी की भाषा को व्यावहारिक बनाने में सहायता करते हैं। उदाहरणार्थ- कहानी में कुड़िमाई, लाड़ी हीरा, जीणेजोगिए इत्यादि पंजाबी शब्द हैं तो जलजला, जमीन, कयामत, खानसामा, खबर इत्यादि शब्द उर्दू के हैं। इसी प्रकार सैनिकों की बातचीत में फील्ड, रेजिमेंट, मेस, रायफल इत्यादि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी सहजता से देखा जा सकता है। लेखक को ज्यों ही मौका मिला उन्होंने संस्कृत का भी प्रसंगानुकूल प्रयोग 'दन्तवीणोपदेशाचार्य' कर डाला। इतना ही नहीं 'घरबारी सिख' जैसे शब्द का भी प्रसंग गर्भत्व रूप में प्रयोग जिसका प्रयोग लगभग कहीं नहीं मिला है, गुलेरीजी ही कर सकते थे।

कहानी की सरसता एवं कथावस्तु की गंभीरता को बनाए रखने के लिये गुलेरी जी ने भाषा-शैली के अन्य उपकरणों का भी सार्थक प्रयोग किया है। इस कहानी में प्रयुक्त लोकोक्ति एवं मुहावरे जहाँ लेखक के लोकनिकट होने की सूचना देने के साथ-साथ कहानी की गतिशीलता को भी बनाए रखने में मदद करते हैं वहीं भाषा का वह भी कहानी विधा में काव्यात्मक प्रयोग भाषा पर उनके अधिकार का प्रमाण देता है। कुछ उदाहरण देख लीजिए-

लोकोक्ति एवं मुहावरे- नाक के सीध में चलना, मत्था टेकना, आँचल-पसारना, आँख मारना, पलक नहीं झपकने देना, बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है बिना लड़े सिपाही, खेत रहना, चीभ चलना इत्यादि

काव्यात्मकता-"लड़ाई के समय चाँद निकल आया और हवा ऐसी चल रही थी जैसे बाणभट्ट की भाषा में दन्तवीणोपदेशाचार्य।"

इस कहानी में हास्य-व्यंग्य का भी पर्याप्त पुट है, खासकर लपटन साहब और लहनासिंह की बातचीत तथा लहनासिंह एवं अन्य साथी सिपाहियों की युद्ध के मैदान में बातचीत में। एक बात और कि इस कहानी में लेखक ने एक पंजाबी लोकगीत का भी प्रयोग किया है। इस गीत की आलोचना कुछ आलोचकों ने अशीलता के दायरे में की थी, लेकिन यहाँ यह भी ध्यान रखने की बात है कि मनुष्य जब दुख या संघर्ष में या अपनी जमीन (देश) से दूर होता है तब उसकी शक्ति का स्रोत ये लोकजीवन के ही गीत होते हैं। इसलिए लोकजीवन के ये शब्द कहानी को सुरुचिपूर्ण एवं उसके कथानक को गति प्रदान करते हैं न कि अनर्गल प्रयास बनते हैं। इसलिए पूर्वदीप्ति पद्धति एवं संवाद शैली का प्रयोग कर लिखी गई यह कहानी न केवल हिंदी कहानी को एक ही झटके में प्रौढ़ बनाने वाली रचना बन जाती है अपितु गुलेरीजी ने यहाँ अपने भाषागत पांडित्य का प्रयोग जीवनगत भाषा को गढ़ने में किया है।

6. **उद्देश्य:** अपने उदय के आरंभिक काल से ही साहित्य की सभी विधाओं का प्राथमिक उद्देश्य आनंद प्रदान करना रहा है। साहित्य आनंद प्रदान अवश्य करता है लेकिन मनोरंजन या आनंद का साधन बनना उसका एकमात्र उद्देश्य नहीं हो सकता है। फिर कहानी तो (साहित्य की अन्य विधाओं से कहीं अधिक) जीवन की वास्तविक झलक देने की क्षमता से युक्त होती है। तभी तो प्रेमचंद ने कहानी को परिभाषित करते हुए इसे 'मानव जीवन का चित्र मात्र' घोषित किया है। गुलेरीजी की लेखनी का उद्देश्य उत्थान तथा प्रगति के पथ पर देश को ले जाना तथा भारतीयता के उच्चादर्शों से सभी का परिचय कराना रहा है। इसलिए त्याग, दया, प्रेम

14. वही, पृ. 24

भाईचारे, उत्सर्ग जैसे मूल्य जहाँ सहज रूप में उनके यहाँ मिल जाते हैं वहीं दूसरी ओर उन मूल्यों का भी पर्दाफाश किया गया है जो मानवता के विकास में बाधक हैं।

वैसे तो गुलेरी जी की तीनों कहानियाँ "परिस्थितियों पर इच्छाशक्ति की विजय की रचनाएँ"[15] हैं। लेकिन 'उसने कहा था' में उन्होंने बाल्यकाल के सात्विक प्रेम की परिणति कर्तव्य में और कर्तव्य-बोध की परिणति आत्मोत्सर्ग में दिखाकर एक उदात्त उद्देश्य को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। इसमें यथार्थ है, मर्यादा है, भावुकता है, त्याग है और सबसे ऊपर प्रेम का स्वर्गीय रूप विद्यमान है। इसलिए यहाँ सामाजिक आदर्शों का प्रतिष्ठित रूप झाँकता हुआ दिखाई पड़ता है। प्रेम जैसे शाश्वत भाव में द्वन्द्व की स्थितियाँ न दिखाकर उत्सर्ग के माध्यम से उसकी उदात्तता प्रस्तुत की गई है। हालाँकि इस कहानी के उद्देश्य को लेकर आलोचकों में एक राय नहीं है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार यह कहानी 'प्रेम के यथार्थ पक्ष को सुरुचिपूर्ण' तरीके से प्रस्तुत करती है तो जैनेन्द्र कुमार के लिए 'त्यागमय प्रेम के आदर्श की पुनर्प्रतिष्ठा' है। रमेश उपाध्याय की मानें तो 'उसने कहा था' में 'युद्ध ही प्रमुख' है। मस्तराम कपूर यहाँ 'प्रेम की आध्यात्मिक अनुभूति पर बल' को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। धर्मवीर भारती ने जब इस कहानी का नाट्य रूपांतरण किया था तब उन्होंने भी युद्ध विरोध को प्रमुखता दी है जरूर, लेकिन 'हिंसा और हत्या के पैशाचिक नग्न नृत्य में भी मनुष्य को पशु होने से बचाने और उसमें मानवता का आत्मविश्वास जगाए रखने वाली प्रवृत्ति के रूप में ही प्रेम को बताया है। (देखें रंग प्रसंग पत्रिका, अंक 35) उत्तर आधुनिक आलोचकों के यहाँ यह कहानी तो प्रेम, त्याग एवं आदर्श के साथ-साथ एक उपनिवेशवादी पाठ का संदर्भ बनकर भी उभरी है। बहरहाल लहनासिंह के माध्यम से लेखक ने इस कहानी में निश्छल प्रेम, त्याग, वीरता, समर्पण एवं आत्मोत्सर्ग जैसी उच्च मानवीय भावों की प्रतिष्ठा कुशलतापूर्वक की है और जहाँ कहीं भी उन्हें मौका मिला है उन्होंने मानवता एवं भारतीयता के उच्चादर्शों को भी बताने में चूक नहीं की है।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि द्विवेदी युग की एक रचना और हिंदी कहानी की आरंभिक कहानी होने के बावजूद भी 'उसने कहा था' लेखक की क्रांतिदर्शी दृष्टि के कारण ही समकालीन परिदृश्य में भी पठनीय है एवं कहानी-कला की दृष्टि से भी अपना अक्षुण्ण प्रभाव अंकित करती है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में वैसे तो मात्र एक रचना से लेखक की पहचान एवं प्रतिष्ठा की प्रक्रिया 'बिहारी सतसई' से ही आरंभ हो गई थी लेकिन कहानी-विधा में यह श्रेय निश्चित रूप से चंद्रधर शर्मा गुलेरी को ही जाता है। वाणी ग्रंथाली से प्रकाशित 'पंडित चंदधर शर्मा गुलेरी की कहानियाँ' की भूमिका में उदय प्रकाश लिखते हैं- "किसी रचनाकार की कोई एक ही कृति उसे कालजयी बना सकती है, कथा साहित्य में इसके अकेले सबसे बड़े उदाहरण हैं गुलेरीजी।... 'उसने कहा था' का कथानक, शैली, भाषा और विन्यास इतना समय गुजर जाने के बावजूद आज तक उतनी ही ताजगी और नएपन से भरपूर है, जितना वह आज से कई वर्ष पहले था। निस्संदेह यह कहानी हिंदी कथा साहित्य की एक क्लासिक रचना है और आने वाले वर्षों में अपनी विलक्षण कलात्मकता के लिये याद रखी जाएगी।"[16] स्पष्ट है कि 'उसने कहा था' कथ्य एवं शिल्प दोनों ही दृष्टि से एक उत्कृष्ट एवं सफल रचना है। निरंतर बदलते जा रहे साहित्यिक एवं सामाजिक मूल्यों के बावजूद यह कहानी अपने कालजयी सौंदर्य के कारण ही लगभग 100 वर्षों के बाद भी रचनाकारों, पाठकों एवं प्रबुद्ध आलोचकों के दिलचस्पी, उत्सुकता और अनुसंधान की नवीनता का सोता बना हुआ है प्रेम और त्याग की इस महागाथा पर महाकवि माघ की यह पंक्ति अक्षरशः चरितार्थ होती है कि- "क्षणे क्षणे यवन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः।"

-नीरज

तदर्थ असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

भारती महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

15. मस्तराम कपूर- चंद्रधर शर्मा गुलेरी, पृ. 45

16. उदय प्रकाश (संपादक)- पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियाँ, पृ. 5